ऑपरेशन सिंदूर

पहलगांव की घाटी से आतंकियों ने, पुरे भारत को ललकारा था |
हमारी माँ-बहनों की आँखों आगे, उनका सिंदूर उजाडा था |
हुँकार भरी थी ऐसी कायरता की, जिसने सबके दिल को झकझोर दिया |
ा थम गई, जल की धारा खामोश हो गई, ऐसा आतंकियों ने माँ भारती के दिल पर घात दिया |
माँ-बहनों ने पुकारा — " बोले मोदी को बताना है, अब कायरता का उत्तर दिखाना है।
प्रधानमंत्री मोदी थे विदेश यात्रा पर, जब सुनी यह दर्द भरी दास्तां |
तुरंत भारत लौटे चले आए थे , और शुरू हुआ बैठकों का सिलसिला।
दिन-रात एक हो गए, काटे-कट नहीं रहे थे, माँ-बहनों की चीखें गूंज रही थीं |
सूनी मांगें, वीरान आँखें देख — हर देशवासी के दिल में आक्रोश उमड़ रहा था।
पन्द्रवीं रात कायरता के लिए कायरों को दफ्फ्नाने देनी वाली थी |
उस रात माँ भारती के शूरवीरों का पराक्रम था जारी, आतंकियों के घर में छाया था मातम भारी|
कब्र खोद डाली आतंक और आतंकियों की, माँ भारती के वीर सपूत ने |
जो सिंदूर उजाड़ा था आतंक ने, वे ही सिंदूर काल बनकर टूटा था उनपर भारी |
चारो ओर दुश्मनों में हाहाकार मचा था, सिंदूर का प्रतिशोध पड़ा था उनपर भारी |
ब्रह्मोस गरजा, आकाश लहराया, नभ भी युद्ध में झूमा,
भारत ने अपनी स्वदेशी शक्ति की गूंज पूरे विश्व को है दिखलाई |
सिंदूर की रक्षा के लिए — नभ, जल, थल सभी लगे |
सिंदूर बना अस्त्र, और रण में शत्रु के सारे मंसूबे हवा में ही बह गए।
ऑपरेशन सिंदूर, नाम बना इतिहास में,
सिंदूर से मिटाया आतंक, गर्जना उठी आकाश में |
लेफ्टिनेंट जनरल राजीव घई, विंग कमांडर सोफिया,
और एयर मार्शल ए. के. भारती सिंह, बने विजय का संदेश।
ऑपरेशन सिंदूर — हमने सिंदूर की शक्ति का परिचय ऐसा दिया,
दो ही दिनों में दुश्मनों को घुटनों पर लाकर खड़ा किया।
माँ भारती के शूरवीरों का पराक्रम था ऐसा, जिसने पूरी दुनिया को चौंका दिया।
जय हिन्द! जय भारत! भारत माता की जय!
ऑपरेशन सिंदूर- पहलगांव में जो सिंदूर मिटाने चले थे,
वो तीन दिन भी सिंदूर के सामने टिक न सके।
वे कहते थे — "मोदी को बताना है!"
मोदी बोले — "नहीं, सिंदूर से ही खोद दी आतंक की कब्र!"
जय हिन्द! जय भारत! भारत माता की जय!
ऑपरेशन सिंदूर अभी भी जारी है।

प्रमोद कुमार, उच्च श्रेणी लिपिक

20.05.2025

देश के विकास में योगदान

पिछले दिनों के घटनाक्रम ने मुझे यह सोचने पर मजबूर किया कि मेरे देश के विकास में व्यक्तिगत स्तर पर मेरा क्या योगदान है? या मेरा क्या योगदान हो सकता है?

2) वास्तव में, एक साधारण नागरिक का देश के विकास में भला क्या योगदान हो सकता है। मुझे लगता है कि देश के विकास में मेरा योगदान करोड़ों में से महज एक चींटी के समान ही है।

3) एक नागरिक के रूप में मैं अपने कर्तव्य निभाता हूँ। अपने आस-पास साफ़-सफाई रखता हूँ एवं गन्दगी नहीं फैलाता हूँ। प्लास्टिक पॉलिथीन का उपयोग नहीं करता एवं दूसरों को भी हतोत्साहित करता हूँ।

4) सरकार के नियमों का पालन करंता हूँ। इनकम टैक्स भरता हूँ। ट्रैफिक के नियमों का पूरी तरह से पालन करता हूँ।

5) मैंने कुल तीन बार स्वैच्छिक रक्त दान किया है। इसके अतिरिक्त किशोरावस्था में गर्मी की छुट्टियों में एक संस्था से जुड़कर पास की झुग्गी बस्ती के कुछ बच्चों को हिंदी का अक्षर ज्ञान एवं गिनती सिखाई।

6) व्यावसायिक रूप में मुझे ऐसे कार्यालय से जुड़ने का गौरव मिला है जो कि देश के निर्यात विकास जैसे कार्य से जुड़ा है एवं देश के विकास में योगदान देता है। मैं एक कार्यालय में एक सामान्य कर्मचारी हूँ। हमारे कार्यालय का यही उद्देश्य होता है कि ईओयू एवं एसईजेड स्कीम के माध्यम से देश का निर्यात, इन्वेस्टमेंट एवं रोज़गार लगातार बढ़ता जाए।

7) यद्यपि, फिर भी मुझे सदैव लगता है कि मैं इससे बेहतर योगदान देश के विकास में कर सकता हूँ।

8) मेरा यह विश्वास है कि अपना नियत कार्य पूरी ज़िम्मेदारी पूर्वक करना भी देश सेवा ही है।

---x---

सुनील गुलयानी